

“और तक्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।”

(सूर-ए-आराफ़)

## घर और समाज में खुदा का डर (तक्वा)

(पिछले शूमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान  
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

### तक्वे (संयम) की असलियत

तक्वा अरबी शब्द है जो 'वक्फ़' से निकला है। 'वक्फ़' के माने खुद को बचाए रखने और खुदा की हराम की हुई चीज़ों से बचे रहने और परहेज़ करने का है।

तक्वा सच में एक ऐसा हौसला और ताक़त है जो गुनाह छोड़ने और हराम व बुराईयों की लत अपनाने के मज़े से अपने को बराबर रोके रखने की मशक़ से मिलता है। तक्वा अपना लेने और अपने को गुनाहों से बचाये रखने का हौसला पैदा करना बहुत बढ़िया क़दम और बड़ा प्यारा काम है। तक्वा अपनाना एक ऐसी इबादत है जो खुदा के हुक्म से की जाती है। इससे खुदा ज़रूर खुश होगा। बदन की, माल की और आचरण की व नैतिक (Moral) इबादत का फ़लसफ़ा आदमी की ज़िन्दगी में तक्वे को उभारना है। जिस इबादत से तक्वा पैदा न हो वह इबादत नहीं है। तक्वा बड़ाई की बुनियाद, शराफ़त की जड़, सफलता की गारण्टी और आख़िरती भलाई की कुन्जी है।

समाज हज़ारों घरानों से मिलकर बनता है। घराना मियाँ-बीवी और कुछ बच्चों से मिलकर बनता है। असल में घराने और समाज का आधार लोग ही होते हैं। अगर एक-एक आदमी

तक्वे वाला और संयमी बन जाये ता सही घराना और नेक समाज वजूद में आ जाये जिसके अन्दरूनी और बाहरी माहोल में अमन चैन का राज होगा। उसके लोगों की आदमियत पूरी होने के लिए मनचाही ज़मीन बराबर होगी। नतीजे में ऐसा समाज वजूद में आ जायेगा जिसका एक-एक आदमी एक-दूसरे का भला चाहने वाला होगा और सभी एक दूसरे को नुक़सान पहुँचाने से बचे रहेंगे।

तक्वे वालों से खुदा मुहब्बत करता है, नबी व इमाम उन्हें दोस्त रखते हैं और वही लोग भले, शरीफ़ उपयोगी और बड़े होते हैं। तक्वे वाले बड़े अच्छे किरदार के मालिक होते हैं। उनके चेहरे से खुदा का नूर टपकता है, वह बहुत अच्छे चलन, उत्तम आचरण और अच्छाइयों को अपनाते हैं और हर बुराई व गुनाह से अलग-थलग रहते हैं।

आदमी, ख़ानदान और समाज की इज़्ज़त खुदा के तक्वे में ही है। खुदा के नज़दीक तक्वे वालों से ज़्यादा कोई आदमी, घराना या समाज इज़्ज़त वाला नहीं है।

मियाँ बीवी को माँ-बाप औलाद को और समाज के दूसरे लोगों को आपस में जो एक-दूसरे से नुक़सान पहुँचते हैं वे तक्वा न होने की वजह

से पहुँचते हैं। घरों में और लोगों में एक-दूसरे से जो डर, वहशत रहती है वह भी तक्वा न होने के कारण है। लोगों की ज़िन्दगी से जुड़े मुद्दों में जो बेपनाह नुक़सान दिखायी देते हैं वह भी तक्वा न होने की वजह से होते हैं। वाक़ई एक आदर्श (Ideal) घराना बनाने के लिए मियाँ-बीवी पर वाजिब है कि वे खुद तक्वा अपनायें और यह भी ज़रूरी है कि वे तक्वे को अपनी नसलों (Generations) में पहुँचायें और शुरु से ही अपनी औलाद में तक्वा पैदा करने की कोशिश करें।

अच्छा होगा कि आप तक्वे के बेपनाह फ़ायदों को कुआन मजीद की आयतों और रिवायतों में देखें। फिर अन्दाज़ा लगायें और सोचें कि अगर सारे लड़के-लड़कियाँ तक्वे से सज-संवर जायें और फिर इस रूहानी पूँजी से शादी करें तो कितना अच्छा घर और समाज वजूद में आ जायगा।

## तक्वा और उसके दर्जे

कुआन मजीद में जो लोग सूझ-बूझ रखते हैं और जिन्होंने रूहानी ऊँचाईयाँ पा ली हैं, वे तक्वे की तीन दर्जे श्रेणियाँ बताते हैं :-

- 1— ख़ासमख़ास तक्वा
- 2— ख़ास तक्वा
- 3— आम तक्वा

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक (अ0) इन तीनों दर्जों को एक रिवायत में इस तरह साफ-साफ़ बयान करते हैं :-

“पहला दर्जा ‘बिल्लाह फील्लाह’ तक्वा (खुदा से खुदा के लिए खुदा में डर), यह हलाल

चीज़ों के इस्तेमाल न करने का नाम है, शक़ शुब्हे वाली चीज़ों की तो बात ही नहीं। दूसरा दर्जा ‘मिनल्लाह’ (खुदा से तक्वा) तक्वा है। यह हराम तो क्या शुब्हे वाली चीज़ों से बचने को कहते हैं। यह ख़ास तक्वा है। तीसरा दर्जा जहन्नम के और खुदा के दुखद व पीड़ा देने वाले अज़ाब (के डर) की वजह से पैदा होता है। यह सभी गुनाहों और हराम चीज़ों को छोड़ने का नाम है। इसको आम तक्वा कहते हैं।”

(मवाएज़े अददिया पेज-180)

साफ़ रहे कि इमाम जाफ़र सादिक (अ0) की हदीस में जो हलाल छोड़ने की बात आयी है उसका मतलब यह है कि ऐसा तक्वा रखने वाले बहुत सी हलाल चीज़ों के पीछे भी नहीं दौड़ते हैं क्योंकि वह उनकी ज़रूरत महसूस नहीं करते और उन्हें जिन हलाल चीज़ों की ज़रूरत होती है उनमें भी कम से कम काम लेकर राज़ी खुशी रहते हैं। हर आदमी इस तरह थोड़े पर राज़ी रह सकता है। अगर कोई यह कहे कि मुझमें यह करने की सकत नहीं है तो यह बात मानने के काबिल नहीं है। हलाल में भी थोड़े पर राज़ी-खुशी रहना और ज़िन्दगी की भौतिक (Material) चीज़ों को कम से कम इस्तेमाल में लाना, शान्दार मकान बनाने से बचना तथा महंगी सवारी ख़रीदने, भारी कीमत वाला कपड़ा बनाने और दस्तरख़ान या डाइनिंग टेबल (Dining Table) पर तरह-तरह के खाने चुनना, इन बातों से बचना एक नैतिक (Moral) ज़िम्मेदारी और चहीता काम है, इससे ज़िन्दगी की मामलों में खुदा का तक्वा पैदा होता है।

(जारी)